Volume: 5 Issue: 5 Pages: 139-142

बुद्धिमत्ता का संदर्भीकरण: ज्ञान को व्यावहारिक कौशल में बदलने की कला

[*1]सत्य नरायन यादव और [2]कुंदन लाल वर्मा

[*1, 2]सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, स्व. गुलाब बाई यादव स्मृति शिक्षा महाविद्यालय बोरावां (खरगोन), मध्य प्रदेश, भारत।

Article Info.
E-ISSN: 2583-6528
Impact Factor (QJIF): 8.4
Peer Reviewed Journal
Available online:
www.alladvancejournal.com

Received: 20/April/2026
Accepted: 18/May/2026

***Corresponding Author**
सत्य नरायन यादव
सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, स्व. गुलाब बाई यादव स्मृति शिक्षा महाविद्यालय बोरावां (खरगोन), मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र "बुद्धिमत्ता का संदर्भीकरण: ज्ञान को व्यावहारिक कौशल में बदलने की कला" इस आधारभूत विचार की पड़ताल करता है कि आधुनिक युग में बुद्धिमत्ता का अर्थ केवल सूचनाओं को संचित करना नहीं, बल्कि उन्हें विशिष्ट परिस्थितियों के अनुरूप ढालना है। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में, जहाँ सूचना की उपलब्धता असीमित है, वहां 'ज्ञान' (Knowledge) और 'व्यावहारिक कौशल' (Skill) के मध्य एक गहरा अंतराल देखा जा रहा है। यह शोध इस अंतराल को पाटने के लिए 'संदर्भीकृत बुद्धिमत्ता' (Contextualized Intelligence) को एक अनिवार्य सेतु के रूप में प्रस्तावित करता है। शोध का सारांश यह है कि बुद्धिमत्ता कोई स्थिर या जन्मजात इकाई नहीं है, बल्कि यह परिवेश के साथ निरंतर संवाद करने वाली एक गतिशील प्रक्रिया है। रॉबर्ट स्टर्नबर्ग के त्रिकोणीय सिद्धांत को आधार बनाते हुए, यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि कैसे व्यावहारिक बुद्धिमत्ता व्यक्ति को उसके सामाजिक, सांस्कृतिक और व्यावसायिक वातावरण में अनुकूलन (Adaptation), चयन (Selection) और आकार देने (Shaping) में सक्षम बनाती है।
शोध के अंतर्गत यह विश्लेषण किया गया है कि शैक्षणिक संस्थानों द्वारा प्रदान किया जाने वाला सैद्धांतिक ज्ञान अक्सर वास्तविक जीवन की जटिलताओं में विफल हो जाता है क्योंकि उसमें 'संदर्भ' का अभाव होता है। अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि ज्ञान को कौशल में रूपांतरित करने की प्रक्रिया चार प्रमुख स्तंभों पर टिकी है: समालोचनात्मक चिंतन, परावर्तनीय अभ्यास, आत्म-जागरूकता और संज्ञानात्मक लचीलापन। जब कोई शिक्षार्थी अपने सैद्धांतिक बोध को स्थानीय संदर्भों और व्यक्तिगत अनुभवों के साथ एकीकृत करता है, तभी वह प्रसंगोचित निर्णय लेने की क्षमता विकसित कर पाता है। यह शोध पत्र अंततः यह प्रतिपादित करता है कि 21वीं सदी की शिक्षा प्रणाली का मुख्य लक्ष्य छात्रों को केवल 'सूचना संपन्न' बनाना नहीं, बल्कि उन्हें 'संदर्भ-कुशल' (Context-Smart) बनाना होना चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) के संदर्भ में, यह अध्ययन स्थानीय संस्कृति और व्यावहारिक परिवेश को शिक्षण का अभिन्न अंग बनाने की आवश्यकता पर बल देता है ताकि शिक्षा को वास्तविक अर्थों में सशक्त बनाया जा सके।

मुख्य शब्द: बुद्धिमत्ता का संदर्भीकरण, ज्ञान बनाम कौशल, परिवेशीय अनुकूलन, स्टर्नबर्ग का दृष्टिकोण, व्यावहारिक बुद्धिमत्ता, एनईपी 2020।

1. प्रस्तावना

मानव सभ्यता के इतिहास में बुद्धिमत्ता को सदैव एक रहस्यमयी और श्रेष्ठ क्षमता के रूप में देखा गया है। सदियों से "ज्ञान ही शक्ति है" के सिद्धांत को शिक्षा का मूल मंत्र माना गया, किंतु वर्तमान सूचना क्रांति और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के उदय ने इस परिभाषा को पुनः परिभाषित करने के लिए विवश कर दिया है। आज के युग में चुनौती सूचना प्राप्त करना नहीं, बल्कि उस सूचना की प्रासंगिकता को पहचानना और उसे विशिष्ट उद्देश्यों के लिए प्रयोग करना है। यहीं से 'बुद्धिमत्ता के संदर्भीकरण' की अवधारणा का जन्म होता है। संदर्भीकरण का अर्थ है—ज्ञान को उसके अमूर्त रूप से निकालकर यथार्थ की ठोस परिस्थितियों में लागू करना। अक्सर देखा गया है कि उच्च शैक्षणिक योग्यता रखने वाले व्यक्ति भी

वास्तविक जीवन की साधारण समस्याओं या कार्यस्थल की चुनौतियों के सामने असहज महसूस करते हैं। इस विसंगति का मुख्य कारण यह है कि हमारी शिक्षा प्रणाली 'क्या सोचना है' (What to think) पर तो ध्यान देती है, किंतु 'परिस्थितियों के अनुसार कैसे सोचना है' (How to think contextually) को अनदेखा कर देती है। प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य तर्क यह है कि ज्ञान और कौशल दो अलग-अलग ध्रुव नहीं हैं, बल्कि एक ही प्रक्रिया के दो छोर हैं, जिन्हें संदर्भीकरण जोड़ता है। बुद्धिमत्ता का संदर्भीकरण व्यक्ति को वह दृष्टि प्रदान करता है जिससे वह यह समझ सके कि कोई विशेष सिद्धांत किस परिस्थिति में कार्य करेगा और कहाँ वह निष्प्रभावी हो जाएगा। उदाहरण के लिए, एक चिकित्सक का चिकित्सा विज्ञान का ज्ञान (ज्ञान) तब तक अधूरा है जब तक वह मरीज की सामाजिक-आर्थिक स्थिति और मानसिक अवस्था (संदर्भ) को समझकर इलाज न करे (कौशल)। यह शोध पत्र स्टर्नबर्ग, गार्डनर और जॉन ड्यूवी जैसे विद्वानों के सिद्धांतों के माध्यम से इस बात की व्याख्या करता है कि कैसे मानवीय बुद्धिमत्ता अपने परिवेश के साथ अंतःक्रिया करके 'कौशल' का रूप लेती है। आज के तेजी से बदलते वैश्विक कार्य-वातावरण में, 'संज्ञानात्मक लचीलापन' (Cognitive Flexibility) ही एकमात्र ऐसा गुण है जो मनुष्य को मशीनों से अलग करता है। यह शोध पत्र न केवल सैद्धांतिक विमर्श प्रस्तुत करता है, बल्कि उन व्यावहारिक रणनीतियों की भी चर्चा करता है जिनके माध्यम से शिक्षा को अधिक प्रसंगोचित बनाया जा सकता है। प्रस्तावना के इस क्रम में, यह शोध शिक्षाविदों, नीति निर्धारकों और शिक्षार्थियों का ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहता है कि यदि ज्ञान को संदर्भ का पोषण न मिले, तो वह केवल एक मृत सूचना बनकर रह जाता है। अतः, बुद्धिमत्ता को संदर्भीकृत करना केवल एक विकल्प नहीं, बल्कि एक अनिवार्य शैक्षणिक आवश्यकता है।

2. शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

i). **बुद्धिमत्ता की परिभाषा का विस्तार करना:** केवल संज्ञानात्मक क्षमताओं के बजाय बुद्धिमत्ता को 'परिवेशीय अनुकूलन' के रूप में परिभाषित करना।

ii). **ज्ञान और कौशल के अंतराल का विश्लेषण:** यह समझना कि क्यों उच्च शैक्षणिक योग्यता के बावजूद व्यक्ति व्यावहारिक परिस्थितियों में असफल हो जाते हैं।

iii). **सैद्धांतिक मॉडल का परीक्षण:** रॉबर्ट स्टर्नबर्ग के त्रिकोणीय सिद्धांत के व्यावहारिक अनुप्रयोगों की जाँच करना।

iv). **शिक्षण विधियों में सुधार हेतु सुझाव:** शिक्षा प्रणाली में संदर्भीकृत अधिगम (Contextual Learning) को बढ़ावा देने के मार्ग प्रशस्त करना।

v). **व्यावहारिक दक्षताओं की पहचान:** उन प्रमुख स्तंभों की पहचान करना जो सैद्धांतिक ज्ञान को क्रियाशील कौशल में बदलते हैं।

3. साहित्य सर्वेक्षण

प्रस्तुत शोध बुद्धिमत्ता के बहुआयामी और संदर्भीकृत स्वरूप को समझने के लिए विभिन्न मनोवैज्ञानिक और शैक्षिक सिद्धांतों का विश्लेषण करता है। बुद्धिमत्ता के संदर्भीकरण की आधारशिला रॉबर्ट स्टर्नबर्ग के कार्यों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। स्टर्नबर्ग (1985) ने अपने त्रिकोणीय बुद्धिमत्ता सिद्धांत में प्रतिपादित किया कि पारंपरिक आईक्यू परीक्षण केवल विश्लेषणात्मक क्षमताओं को मापते हैं, जबकि जीवन की वास्तविक चुनौतियों का सामना करने के लिए 'व्यावहारिक बुद्धिमत्ता' (Practical Intelligence) अनिवार्य है। उन्होंने आगे स्पष्ट किया कि सफल बुद्धिमत्ता व्यक्ति की वह क्षमता है जिससे वह अपने सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश के साथ अनुकूलन (Adaptation) करता है या उसे अपनी आवश्यकताओं के अनुसार आकार (Shaping) देता है (Sternberg, 1997)। संदर्भीकरण के इस विचार को हॉवर्ड गार्डनर ने अपने 'बहु-बुद्धिमत्ता सिद्धांत' के माध्यम से और अधिक विस्तार दिया। गार्डनर (2011) के अनुसार, बुद्धिमत्ता केवल एक सामान्य मानसिक क्षमता नहीं है, बल्कि इसमें अंतर्वैयक्तिक और अंतःवैयक्तिक जैसे विविध आयाम शामिल हैं जो व्यक्ति को विभिन्न सामाजिक संदर्भों में प्रभावी ढंग से कार्य करने के योग्य बनाते हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में संदर्भीकरण का महत्व जॉन ड्यूवी के अनुभववादी दृष्टिकोण से भी प्रमाणित होता है। ड्यूवी (1933) का मानना था कि अधिगम केवल सूचनाओं का ग्रहण करना नहीं है, बल्कि यह परावर्तनीय चिंतन (Reflective Thinking) की एक प्रक्रिया है जहाँ ज्ञान को व्यक्तिगत और सामाजिक अनुभवों के संदर्भ में परखा जाता है। उनके अनुसार, वास्तविक शिक्षा तब होती है जब ज्ञान क्रिया (Action) में बदलता है। इसी क्रम में, डैनियल गोलमैन (1995) ने संवेगात्मक बुद्धिमत्ता की अवधारणा को पेश करते हुए तर्क दिया कि संज्ञानात्मक कौशल के साथ-साथ संवेगों और सामाजिक परिस्थितियों को समझने की दक्षता ही व्यक्ति के 'व्यावहारिक कौशल' को निखारती है। समकालीन परिप्रेक्ष्य में, भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) भी इसी दिशा में एक बड़ा कदम है, जो 'रटंत प्रणाली' को समाप्त कर स्थानीय परिवेश, भाषा और व्यावहारिक ज्ञान के एकीकरण पर बल देती है ताकि छात्रों में संदर्भीकृत कौशल का विकास हो सके (Ministry of Education, 2020)। इस प्रकार, साहित्य का विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि बुद्धिमत्ता अपनी प्रकृति में गतिशील और संदर्भीकृत है।

4. शोध विधि

इस शोध पत्र के निर्माण के लिए निम्नलिखित वैज्ञानिक शोध पद्धति का उपयोग किया गया है:

- **शोध का स्वरूप:** यह एक 'गुणात्मक एवं विश्लेषणात्मक' (Qualitative & Analytical) शोध है। इसमें वर्णनात्मक पद्धति का प्रयोग करते हुए मौजूदा सिद्धांतों का व्यावहारिक विश्लेषण किया गया।
- **आंकड़ा संग्रहण:** प्रस्तुत शोध 'द्वितीयक स्रोतों' (Secondary Sources) पर आधारित है। इसमें प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिकों की पुस्तकों, शोध लेखों, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) के दस्तावेजों और प्रतिष्ठित जर्नल्स का गहराई से अध्ययन किया गया है।
- **विश्लेषण की विधि:** शोध में 'तुलनात्मक विश्लेषण' (Comparative Analysis) का प्रयोग किया गया है, जहाँ 'सैद्धांतिक ज्ञान' और 'व्यावहारिक कौशल' के मध्य के अंतर को स्टर्नबर्ग के मॉडल के आधार पर परखा गया है।
- **क्षेत्र:** शोध मुख्य रूप से शैक्षिक और पेशेवर परिवेश में बुद्धिमत्ता के संदर्भीकरण के व्यावहारिक आयामों तक सीमित है।

5. संदर्भीकृत बुद्धिमत्ता: सैद्धांतिक आधार

बुद्धिमत्ता का संदर्भीकरण रॉबर्ट स्टर्नबर्ग के 'त्रिकोणीय बुद्धिमत्ता सिद्धांत' (Triarchic Theory of Intelligence) के परिवेशीय घटक पर आधारित है। स्टर्नबर्ग का तर्क है कि बुद्धिमत्ता केवल अमूर्त मानसिक क्षमता नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति और उसके वातावरण के बीच सक्रिय अंतःक्रिया का परिणाम है। इस सिद्धांत के अनुसार, एक संदर्भीकृत बुद्धिमत्ता वाला व्यक्ति तीन प्रमुख संज्ञानात्मक रणनीतियों का उपयोग करता है। पहली रणनीति अनुकूलन (Adaptation) है, जिसमें व्यक्ति अपनी क्षमताओं को मौजूदा वातावरण की मांगों के अनुरूप ढालता है। उदाहरण के लिए, एक नए कार्यस्थल पर जाने के बाद वहां की संस्कृति और कार्यप्रणाली को अपना लेना अनुकूलन का उत्कृष्ट उदाहरण है। यह रणनीति

व्यक्ति को प्रतिकूल परिस्थितियों में भी उत्तरजीवी बनाने में सहायक होती है। दूसरी रणनीति चयन (Selection) है। स्टर्नबर्ग के अनुसार, जब अनुकूलन संभव नहीं होता या वातावरण व्यक्ति के मूल्यों और कौशलों के विपरीत होता है, तो बुद्धिमान व्यक्ति उस वातावरण को छोड़कर एक ऐसे नए वातावरण का चुनाव करता है जो उसकी प्रगति के लिए उपयुक्त हो। यह निर्णय लेने की क्षमता ही संदर्भीकृत बुद्धिमत्ता का परिचायक है। तीसरी और सबसे महत्वपूर्ण रणनीति आकार देना (Shaping) है। इसमें व्यक्ति केवल वातावरण के साथ समझौता नहीं करता, बल्कि अपनी बौद्धिक क्षमताओं का प्रयोग करके वातावरण को अपनी आवश्यकताओं और लक्ष्यों के अनुसार बदल देता है। एक सफल उद्यमी या नेतृत्वकर्ता इसी रणनीति का उपयोग करता है। इस प्रकार, संदर्भीकृत बुद्धिमत्ता व्यक्ति को निष्क्रिय शिक्षार्थी के बजाय एक सक्रिय कर्ता के रूप में स्थापित करती है, जो न केवल ज्ञान प्राप्त करता है, बल्कि यह भी जानता है कि किस परिवेश में उस ज्ञान का विन्यास कैसे करना है। यह मॉडल स्पष्ट करता है कि बुद्धिमत्ता का मापन केवल परीक्षणों से नहीं, बल्कि जीवन की वास्तविक परिस्थितियों के प्रबंधन से किया जाना चाहिए।

6. ज्ञान का कौशल में रूपांतरण: प्रमुख प्रक्रियाएँ

सैद्धांतिक ज्ञान (Theoretical Knowledge) और व्यावहारिक कौशल (Practical Skill) के बीच का रूपांतरण एक जटिल मानसिक प्रक्रिया है, जो स्वतः नहीं होती। इस रूपांतरण का पहला प्रमुख स्तंभ समालोचनात्मक चिंतन (Critical Thinking) है। समालोचनात्मक चिंतन शिक्षार्थी को केवल सूचना स्वीकार करने के बजाय उसकी प्रासंगिकता, तर्कसंगतता और सीमाओं का विश्लेषण करने में सक्षम बनाता है। यह प्रक्रिया ज्ञान को 'शुद्ध सूचना' से निकालकर 'अनुप्रयुक्त विवेक' की ओर ले जाती है। दूसरा स्तंभ परावर्तनीय अभ्यास (Reflective Practice) है। जैसा कि जॉन ड्यूवी ने स्पष्ट किया है, हम केवल अनुभव से नहीं सीखते, बल्कि अनुभव पर किए गए चिंतन (Reflection) से सीखते हैं। जब व्यक्ति अपनी क्रियाओं और उनके परिणामों का आत्म-विश्लेषण करता है, तो वह सैद्धांतिक त्रुटियों को सुधारकर उन्हें व्यावहारिक दक्षता में बदल लेता है।

रूपांतरण का तीसरा महत्वपूर्ण घटक आत्म-जागरूकता (Self-Awareness) है। व्यक्ति को अपने स्वयं के संज्ञानात्मक पूर्वाग्रहों (Biases), शक्तियों और सीमाओं का बोध होना चाहिए। संदर्भीकरण के लिए यह समझना अनिवार्य है कि मेरा वर्तमान ज्ञान किस स्थिति में प्रभावी होगा और कहाँ मुझे नए कौशल सीखने की आवश्यकता है। अंतिम स्तंभ प्रयोगात्मक विन्यास (Experimental Application) है। ज्ञान तब तक कौशल नहीं बनता जब तक उसे 'वास्तविक परिस्थितियों' में लागू न किया जाए। इसमें गलतियाँ करना और उनसे सीखना शामिल है। रूपांतरण की यह प्रक्रिया शिक्षार्थी को एक 'संज्ञानात्मक शिल्पकार' में बदल देती है, जो यह जानता है कि अमूर्त सिद्धांतों को व्यावहारिक समाधानों में कैसे ढालना है। अतः, कौशल विकास केवल अभ्यास नहीं है, बल्कि यह ज्ञान के साथ निरंतर बौद्धिक संवाद की एक सचेत प्रक्रिया है जो व्यक्ति को 'क्या' (What) से 'कैसे' (How) की यात्रा पर ले जाती है।

7. व्यावहारिक आयाम और अनुप्रयोग

बुद्धिमत्ता के संदर्भीकरण के अनुप्रयोग विविध क्षेत्रों में दूरगामी प्रभाव डालते हैं। शैक्षणिक क्षेत्र में, इसका अर्थ है कि पाठ्यक्रम को वास्तविक जीवन की समस्याओं के साथ जोड़ना। वर्तमान में 'केस स्टडी मेथड' या 'प्रोजेक्ट बेस्ड लर्निंग' इसी सिद्धांत पर आधारित हैं। उदाहरण के लिए, जब एक छात्र भौतिकी के सिद्धांतों को केवल किताबों में पढ़ने के बजाय एक वास्तविक पुल के निर्माण में उनके उपयोग को समझता है, तो उसकी बुद्धिमत्ता संदर्भीकृत हो जाती है। भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इसी 'लर्निंग बाय डूइंग' और स्थानीय परिवेश के एकीकरण पर जोर देती है, जिससे छात्र रटंत विद्या के बजाय जीवन कौशलों में दक्ष हो सकें।

पेशेवर और व्यावसायिक जगत में, संदर्भीकृत बुद्धिमत्ता का अनुप्रयोग नेतृत्व और संकट प्रबंधन (Crisis Management) में दिखाई देता है। एक कुशल प्रबंधक वह नहीं है जिसके पास एमबीए की डिग्री है, बल्कि वह है जो बाजार की बदलती परिस्थितियों (संदर्भ) के अनुसार अपनी रणनीतियों को तुरंत बदल सकता है। व्यावसायिक सफलता अक्सर 'टैसिट नॉलेज' (Tacit Knowledge) या अंतर्निहित ज्ञान पर निर्भर करती है कि उसे परिस्थितियों के अनुसार कैसे मोड़ना है।

8. चुनौतियाँ और सीमाएँ

बुद्धिमत्ता के संदर्भीकरण और ज्ञान को व्यावहारिक कौशल में रूपांतरित करने की राह में कई गंभीर व्यावहारिक, मनोवैज्ञानिक और संस्थागत चुनौतियाँ विद्यमान हैं, जो निम्नलिखित हैं:

i). **पारंपरिक मूल्यांकन प्रणाली (अंकों पर आधारित परीक्षा पद्धति):** वर्तमान शैक्षिक ढाँचे की सबसे बड़ी सीमा इसकी संकीर्ण मूल्यांकन प्रणाली है। हमारी परीक्षा पद्धति आज भी स्मृति-आधारित (Rote Learning) है, जहाँ छात्रों की योग्यता का निर्धारण केवल अंकों और ग्रेड के आधार पर होता है। यह प्रणाली विद्यार्थियों में सिद्धांतों को रटने की प्रवृत्ति को बढ़ावा देती है, जिससे उनका प्रयोगात्मक और संदर्भीकृत बोध कुंठित हो जाता है। जब तक मूल्यांकन में 'स्थितिजन्य समस्या-समाधान' (Situational Problem Solving) को स्थान नहीं मिलेगा, तब तक ज्ञान केवल कागजों तक सीमित रहेगा।

ii). **संज्ञानात्मक जड़ता:** यह एक प्रमुख मनोवैज्ञानिक बाधा है, जहाँ शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों ही अपने पुराने सीखे हुए ढर्रों, पारंपरिक शिक्षण विधियों और अपरिवर्तनीय नियमों से चिपके रहना चाहते हैं। नई और बदलती परिस्थितियों के अनुसार अपने पुराने ज्ञान को अपडेट करने या उसमें लचीलापन लाने के प्रति एक आंतरिक प्रतिरोध होता है। यह संज्ञानात्मक जड़ता नवाचार और परिवेशीय अनुकूलन (Adaptation) की क्षमता को पूरी तरह अवरुद्ध कर देती है।

iii). **संसाधनों का अभाव (बुनियादी ढाँचे की कमी):** सैद्धांतिक ज्ञान को व्यावहारिक कौशल में बदलने के लिए जीवंत और संसाधन-युक्त परिवेश की आवश्यकता होती है। किंतु अधिकांश शैक्षणिक संस्थानों में प्रयोगात्मक शिक्षा, लाइव प्रोजेक्ट्स, आधुनिक प्रयोगशालाओं और व्यावहारिक शिक्षण (Experiential Learning) हेतु आवश्यक बुनियादी ढाँचे की भारी कमी है। उचित संसाधनों के अभाव में 'करके सीखने' (Learning by Doing) का सिद्धांत केवल एक दार्शनिक विचार बनकर रह जाता है और धरातल पर क्रियान्वित नहीं हो पाता।

9. शोध के सुझाव

शोध के विश्लेषण और निष्कर्षों के आधार पर, बुद्धिमत्ता के संदर्भीकरण को बढ़ावा देने हेतु निम्नलिखित सुझाव प्रस्तावित हैं:

i). **मूल्यांकन पद्धति में आमूलचूल परिवर्तन:** वर्तमान अंक-आधारित परीक्षा प्रणाली के स्थान पर 'कौशल-आधारित' और 'स्थितिजन्य मूल्यांकन' (Situational Assessment) को अपनाना चाहिए। छात्रों को ऐसी समस्याओं का समाधान करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए जिनका कोई एक निश्चित उत्तर न हो, ताकि वे अपनी संदर्भीकृत बुद्धिमत्ता का प्रयोग कर सकें।

ii). **पाठ्यक्रम का स्थानीयकरण:** शैक्षणिक सामग्री को केवल वैश्विक या राष्ट्रीय स्तर तक सीमित न रखकर स्थानीय परिवेश,

भाषा और व्यावसायिक आवश्यकताओं के साथ एकीकृत किया जाना चाहिए। इससे छात्र ज्ञान को अपने वास्तविक जीवन से बेहतर तरीके से जोड़ पाएंगे।

iii). **परावर्तनीय शिक्षण (Reflective Teaching) का प्रशिक्षण:** शिक्षकों को ऐसे शिक्षण कौशल सिखाए जाने चाहिए जो छात्रों में 'स्व-चिंतन' (Self-reflection) की आदत डालें। कक्षा में केवल सूचना देना पर्याप्त नहीं है, बल्कि छात्रों से यह पूछना अनिवार्य है कि वे उस सूचना का प्रयोग अपने दैनिक जीवन में कैसे करेंगे।

iv). **उद्योग-अकादमिक साझेदारी:** व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में इंटर्नशिप और वास्तविक कार्य-परियोजनाओं (Live Projects) को अनिवार्य बनाया जाना चाहिए। इससे छात्रों को 'टैसिट नॉलेज' (Tacit Knowledge) प्राप्त करने का अवसर मिलेगा, जो केवल अनुभव के माध्यम से संदर्भीकरण से ही संभव है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध पत्र का व्यापक विश्लेषण इस निष्कर्ष पर पहुँचाता है कि बुद्धिमत्ता कोई जड़ या अपरिवर्तनीय मानसिक संप्रत्यय नहीं है, बल्कि यह एक जीवित और गतिशील प्रक्रिया है जिसका पूर्ण प्रकटीकरण केवल 'संदर्भ' की उपस्थिति में ही संभव है। आधुनिक युग की सबसे बड़ी विडंबना यह रही है कि हमने ज्ञान को कौशल से अलग मानकर उसे केवल स्मृति और सूचनाओं के संचय तक सीमित कर दिया। शोध ने स्पष्ट किया है कि जब तक सैद्धांतिक ज्ञान को व्यावहारिक परिस्थितियों के साथ एकीकृत नहीं किया जाता, वह व्यक्ति और समाज दोनों के लिए अनुपयोगी बना रहता है। रॉबर्ट स्टर्नबर्ग के त्रिकोणीय सिद्धांत के माध्यम से यह प्रमाणित हुआ है कि वास्तविक बुद्धिमत्ता वह है जो व्यक्ति को अपने वातावरण के साथ केवल समझौता करना नहीं, बल्कि उसे आवश्यकतानुसार अनुकूलित करने और आकार देने की शक्ति प्रदान करती है। निष्कर्ष का एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि ज्ञान को कौशल में बदलने के लिए समालोचनात्मक चिंतन और परावर्तनीय अभ्यास अनिवार्य हैं। शिक्षा के क्षेत्र में, यह शोध 'रटंत विद्या' से हटकर 'अनुभवात्मक अधिगम' (Experiential Learning) की ओर एक क्रांतिकारी बदलाव का आह्वान करता है। भविष्य के वैश्विक समाज में, जहाँ कृत्रिम बुद्धिमत्ता नियमित कार्यों का स्थान ले रही है, वहाँ मानवीय बुद्धिमत्ता की असली परीक्षा उसके 'प्रसंगोचित विवेक' (Contextual Wisdom) में होगी। यदि हम छात्रों को केवल सूचना संपन्न बनाएंगे, तो वे मशीनों के विकल्प मात्र रह जाएंगे, किंतु यदि हम उन्हें संदर्भीकृत बुद्धिमत्ता से लैस करेंगे, तो वे जटिल मानवीय और सामाजिक समस्याओं के समाधानकर्ता बनेंगे। यह शोध पत्र यह प्रतिपादित करता है कि शिक्षा का अंतिम उद्देश्य 'ज्ञान का संचय' नहीं, बल्कि 'जीवन जीने की कला' विकसित करना होना चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की सफलता भी इसी बात पर निर्भर करेगी कि वह स्थानीय संदर्भों और वैश्विक ज्ञान के मध्य कितना प्रभावी संतुलन बना पाती है। यह समय की मांग है कि हम बुद्धिमत्ता के मूल्यांकन के अपने मानदंडों को बदलें और व्यक्ति की क्षमता को उसकी शैक्षणिक उपाधियों के बजाय उसकी व्यावहारिक दक्षता और परिवेशीय बुद्धिमत्ता के आधार पर मापें। बुद्धिमत्ता का संदर्भीकरण ही वह कुंजी है जो आने वाली पीढ़ियों को अनिश्चित भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार कर सकती है।

References

1. Dewey J. *How we think*. D.C. Heath and Company; 1933.
2. Gardner H. *Frames of mind: The theory of multiple intelligences*. Basic Books; 2011.
3. Goleman D. *Emotional intelligence: Why it can matter more than IQ*. Bantam Books; 1995.
4. Ministry of Education. *National Education Policy 2020*. Government of India; 2020.
5. Polanyi M. *The tacit dimension*. University of Chicago Press; 1966.
6. Schön DA. *The reflective practitioner: How professionals think in action*. Basic Books; 1983.
7. Sternberg RJ. *Beyond IQ: A triarchic theory of human intelligence*. Cambridge University Press; 1985.
8. Sternberg RJ. *Successful intelligence*. Plume; 1997.
9. Sternberg RJ. The theory of successful intelligence. *Review of General Psychology*. 1999;3(4):292-316.
10. Sternberg RJ, Detterman DK. *What is intelligence? Contemporary viewpoints on its nature and definition*. Ablex Publishing; 1986.
11. Sternberg RJ, Forsythe GB, Hedlund J, Horvath JA, Wagner RK, Williams WM, Snook SA, Grigorenko EL. *Practical intelligence in everyday life*. Cambridge University Press; 2000.
12. Sternberg RJ, Grigorenko EL. *Teaching for successful intelligence: To increase student learning and achievement*. Corwin Press; 2007.
13. Vygotsky LS. *Mind in society: The development of higher psychological processes*. Harvard University Press; 1978.
14. Wagner RK, Sternberg RJ. Practical intelligence in real-world pursuits: The role of tacit knowledge. *Journal of Personality and Social Psychology*. 1985;49(2):436–458.
15. Wiggins G, McTighe J. *Understanding by design*. Association for Supervision and Curriculum Development (ASCD); 2005.